सत्यमेव जयते

सविता

हिंदी ई-गृह पत्रिका

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अप्रैल 2020 – सितम्बर 2020

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I)

एवं

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) के कार्यालय,

केरल, तिरुवनंतपुरम

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग ✦ INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

सविता

हिंदी ई-गृह पत्रिका

अप्रैल 2020 - सितम्बर 2020

मुख्य संरक्षक

सुश्री अनिम चेरियान

प्रधान महालेखाकार

संरक्षक

श्री को.प. आनंद

प्रधान महालेखाकार

मुख्य संपादक

डॉ अनीष डी

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशा.)

परामर्शदाता

श्रीमती शेरिन एम एस

वरिष्ठ उप महालेखाकार

(प्रशा. एवं लेप. प्रबंधन समूह-I)

सदस्य

श्रीमती एस. लक्ष्मी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती विष्णुदेवी राजसेनन
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती ए एम भद्राम्बिका
हिंदी अधिकारी

श्रीमती जे आर आशा
हिंदी अधिकारी

श्रीमती राधिका टी वी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री संदीप कुशवाह
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्रीमती किरणदीप कौर
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री सादत हुसैन रिज़वी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

कवर पेज चित्र - श्रीमती रूपा राज

बैक कवर पेज तैल चित्र- श्रीमती दीप्ति उण्णिकृष्णन, व.ले.प.अ

पत्रिका लेआउट- श्री सआदत हुसैन

पत्रिका में प्रस्तुत विचार रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं, संपादक मंडल की सहमति आवश्यक नहीं है

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश

हमारी कार्यालयीन ई-गृह पत्रिका "सविता" के नवीनतम अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है । जहाँ तक लेखन का प्रश्न है, मौलिक लेखों के माध्यम से अभिव्यक्ति केवल अपनी भाषा में ही सहज संभव है। कार्यालय के हिन्दी भाषा-भाषियों के साथ-साथ मलयालम भाषा-भाषी कर्मियों द्वारा हिन्दी में मौलिक लेखन न केवल राजभाषा के प्रति उनकी निष्ठा अपितु राजभाषा के प्रति उनके सम्मान की भावना को दर्शाता है।

वैश्विक महामारी "कोरोना" के कठिन काल ने जहाँ समस्त विश्व को अस्त-व्यस्त कर दिया, व्यस्त जीवन शैली पर रोक लगा दी, वहीं सीमित साधनों में भी निर्वाह करना सिखा दिया। मुझे बेहद खुशी है कि इस कठिन समय में भी आप में से कई रचनात्मक कार्यों में लगे हुए हैं और इस संकट के समय को छोटे-छोटे तरीकों से रोशन कर दिया है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं पत्रिका के संपादक मण्डल को बधाई देती हूँ, साथ ही विश्वास करती हूँ कि संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुरूप सक्षम अधिकारी अधिक से अधिक कर्मचारी को राजभाषा हिन्दी में अपना कार्य करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करेंगे, जिससे सरकारी कार्यों के कार्यान्वयन में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में वृद्धि हो सके।

एक बार फिर से पत्रिका परिवार को "सविता" के नवीनतम अंक हेतु हार्दिक बधाई एवं आगामी अंक के लिए शुभकामनाएं।

अनिम चेरियान

अनिम चेरियान

प्रधान महालेखाकार

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश

हमारी कार्यालयीन गृह पत्रिका 'सविता' के नवीनतम अंक के प्रकाशन पर अतीव प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। फिलहाल पूरी दुनिया कोरोना महामारी की चुनौतियों का एक साथ मिलकर सामना कर रही है.... प्रतीक्षा की किरणें नजर आ रही है ... उम्मीद है कि जल्द ही हम इस वैश्विक महामारी पर काबू पा सकेंगे और मानव राशि को डर और फिक्र बिना एक दूसरे से जुड़ने – हाथ से हाथ मिलाने की शुभ घड़ी फिर से हासिल हो जाएगी।

लेकिन कोरोना महामारी जो घाव हमारे मन-मस्तिष्क, आम जीवन और सामूहिक जीवन में छोड़कर जाएगी उसे भूलना आसान नहीं है। जो नयी सामान्य जीवन शैली हम स्वीकारने के लिए मजबूर हुए थे, आजकल वही आम हो गयी है.....

गृह पत्रिका 'सविता' के नए अंक में प्रकाशित रचनाओं में भी इस महा संकट काल के प्रतिबिंब हम देख सकते हैं। मुझे खुशी है कि हमारे कार्यालय के पदाधिकारियों ने प्रतिकूल परिस्थितियों को भी सृजनात्मक रूप से सकारात्मक बनाया है और अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए हिंदी भाषा का माध्यम अपनाया है। क्योंकि विभागीय पत्रिकाएं इस बात का सुंदर निदर्श है कि सरकारी कर्मचारी राजभाषा हिंदी के प्रति किस हद तक प्रतिज्ञाबद्ध है। विलोम परिस्थितियों के बीच भी पत्रिका के सफल प्रकाशन से जुड़े संपादक मण्डल एवं रचनाकारों को बधाईयाँ ..... उम्मीद है कि हमारी पत्रिका प्रगति पथ पर ऐसे ही अग्रसर होती रहेगी .....

शुभकामनाएं

को.प. आनंद

प्रधान महालेखाकार

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश

हिंदी गृह पत्रिका सविता के प्रकाशन पर सभी को हार्दिक अभिनंदन।

भारत की सांस्कृतिक विविधता को एक सूत्र में बांधने की क्षमता हिंदी भाषा में समाहित है। आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा तभी पूर्ण रूप से सार्थक हो सकती है जब पूरा देश अपनी भाषा में राजकाज करे। राजभाषा हिंदी के प्रचार - प्रसार को बढ़ाने और कार्यालयीन स्तर पर मौलिक हिंदी लेखन कार्य को प्रोत्साहित और प्रेरित करने में हिंदी पत्रिकाओं का विशेष महत्व है।

जैसे कि आप सब जानते हैं विश्व के सभी देश कोरोना महामारी से जूझ रहे हैं, ऐसे तनाव की स्थिति में छोटी-छोटी खुशियां भी मन को बड़ी लगती है, थोड़ी बहुत राहत दे जाती है। गृह पत्रिका 'सविता' को अपनी सृजनात्मक कल्पनाओं से संवारने के लिए सभी रचनाकारों को बधाईयाँ..... मंगलकामनाओं के साथ।

शेरिन एम एस

वरिष्ठ उप महालेखाकार

(प्रशासन एवं लेखापरीक्षा प्रबंधन समूह –I)

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संपादक की कलम से...

कार्यालयीन हिंदी ई-पत्रिका 'सविता' का वर्ष 2020-21 का नवीनतम अंक आप सभी सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। जैसा कि विदित है कार्यालयीन पत्रिकाएं जहाँ एक ओर कर्मचारियों की रचनात्मक अभिव्यक्तियों का साधन है वहीं यह कर्मचारियों को अपने विचार एवं गतिविधियों को प्रस्तुत करने हेतु मंच प्रदान करती हैं। अपने नए रंग-रूप और साज-सज्जा में सजी हिंदी पत्रिका 'सविता' का यह अंक राजभाषा हिंदी को उन्नत पथ की ओर ले जाने का एक विनम्र प्रयास है।

सुदूर दक्षिण भारत से सहज, सरस, सरल राजभाषा हिन्दी की इस ई-पत्रिका में कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा कोरोना काल के दौरान उत्पन्न विषम परिस्थितियों के दौरान अनुभव एवं हृदय उद्गार से रचित लेख समाहित किए गए हैं। इस अंक में प्रकाशित लेखों के रचनाकारों का राजभाषा के प्रति उत्साह व लगाव के लिए मैं आभार व्यक्त करता हूं। विशेषत: श्री को.प.आनन्द, प्रधान महालेखाकार को उनकी पुस्तक "दि कोरोना डायरी", जिसकी संक्षिप्त समीक्षा इस अंक में शामिल की गई है, के प्रति आभार व्यक्त करता हूं। उनकी पुस्तक "दि कोरोना डायरी" कोरोना महामारी के समय लाखों - करोड़ों लोगों के अनकहे - अनसुने - अतुलनीय दर्द की भी कहानी है। राजभाषा हिंदी की ई-पत्रिका 'सविता' का यह अंक आप सभी को पसंद आयेगा, इसका मुझे पूर्ण विश्वास है। पत्रिका में सुधार लाने हेतु आपकी राय एवं सुझावों का स्वागत रहेगा।

डॉ. डी अनीष

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

सविता
हिंदी ई-गृह पत्रिका
अप्रैल 2020 – सितंबर 2020

इस अंक में

1. दि कोरोना डायरी - चंद शब्दों में — श्रीमती भद्रांबिका ए एम, हिंदी अधिकारी

2. कोरोना महामारी – नए बदलाव — श्रीमती राधिका टी वी, वरि. हिन्दी अनुवादक

3. विलीन — श्री सुरेश कुमार आर, स.ले.प.अ

4. आज़ादी — श्रीमती श्रीलता शारदा अम्मा, हिंदी प्राध्यापक

5. कोरोना के कारनामे — श्री सादत हुसैन रिज़वी, क.हिंदी अनुवादक

6. कुयिली — सुश्री के. एस. मीनाक्षी

7. 31 मार्च 2019 को समाप्त वर्ष के लिए भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक का प्रतिवेदन (राज्य वित्त) केरला सरकार का कार्यकारी संक्षेप

8. रंगीन सपना — श्री अनिल कुमार के, केयर टेकर

9. नया साल — श्री पारितोष चौधरी, वरि. लेखापरीक्षक

10. ख़्वाहिशों की कश्मकश — सुश्री मैथिली वे आर

11. हिंदी आंगन की तुलसी — श्री सचीद्र कुमार, सहायक पर्यवेक्षक

12. ज़िंदगी का चुनाव — सुश्री वे आर मालविका

13. एन आर आई — सुश्री देविका ए एन

14. वाह री किस्मत — श्री शाहनवाज़ नज़ीर मोहम्मद, पर्यवेक्षक

दि कोरोना डायरी : चंद शब्दों में

भद्रांबिका ए एम,
हिंदी अधिकारी

दुनिया के एक कोने से सहसा उभरने वाली एक बीमारी ने विश्व भर में मानव जीवन को नाटकीय रूप में नुक्सान किया है, सार्वजनिक स्वास्थ्य, खाद्य प्रणाली और सक्रिय दुनिया के लिए एक अभूतपूर्व चुनौती पेश की है। परिणामत: पिछले एक साल से विश्व एक तरह की नकारात्मक स्थिति का सामना कर रहा है। कोविड जैसे महामारी ने मानव जाति के अस्तित्व को ही एक प्रश्न चिह्न बना कर खडा कर दिया है।

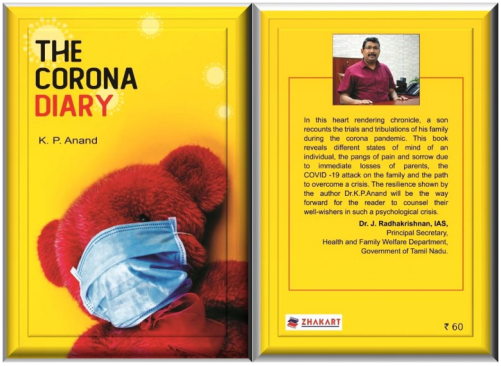

बेहतर निगरानी, बेहतर प्रयोगशाला की क्षमता और बढती हुई स्वास्थ्य देखभाल की मांग के बावजूद, इस रोग के विस्तार का पता लगाना, स्वास्थ्य कर्मियों के लिए चुनौतीपूर्ण समस्या बन गयी है। सभी देशों ने इस रोग के रोकथाम के लिए दैनिक जीवन में एक हिस्से के रूप में नए व्यवहारों को अपनाया, जैसे कि मास्क पहनना, शारीरिक दूरी, टेली-वर्किंग और हाथ की सफाई आदि।

हमारे प्रधान महालेखाकार श्री को.प. आनंद जी द्वारा लिखित "दि कोरोना डायरी", मेरी राय में एक सामान्य व्यक्ति की, गहराई और तीक्ष्णता से महसूस किए गए अनुभवों की सरल और खुले विचारों वाली चित्ताकर्षक अभिव्यक्ति है। इसमें अपने परिवार में चरणबद्ध तरीके से घटित अप्रत्याशित एवं अप्रिय घटनाओं की उलझन भरी स्थिति की सदमा से भावुक व्यक्ति अपनी भावनाओं को हमारे साथ साझा कर रहा है। कोविड काल के दौरान निधन हुए अपने माता -पिता की याद में रचित यह पुस्तक उस प्यार भरी आत्माओं के चरणों पर अर्पित एक भावभीनी श्रद्धांजली है। भूमिका में लेखक ने स्पष्ट किया है कि यह उनकी सर्वप्रथम साहित्यिक रचना है।

"दि कोरोना डायरी" एक ऐसी दुखद आत्मकथा है जिसके नायक व पात्र स्वयं लेखक व उनके परिवार है। हर दिल को कसकने वाली पुस्तक की भूमिका में लेखक कहता है,

"कोरोना महामारी के दौरान हज़ारों लोगों द्वारा सामना किए गए अथाह, अनकहे आघात की तुलना में मेरा दु:ख नगण्य है । फिर भी मैं अपनी यात्रा का अनुलेखन करना चाहता हूं ।" यह केवल इसलिए नहीं है कि साहित्यिक लेख लिखने की उनकी दीर्घकालीन इच्छा थी, बल्कि पाठकगण और उनके हितैषियों के जीवन में होने वाले संकट के दौरान मानसिक तनाव के लिए उनका लेख एक सहारा बन सकता है । हाँ, यह भी सच है, जैसे विख्यात कवि विलियम वार्डस्वर्थ ने लिखा है-

Poetry is the spontaneous
overflow of powerful feelings,
It takes its origin from emotion
recollected in tranquility.

अपने जीवन में हुई दुखद घटनाओं के छाँव में खडे होकर मन में हुई अथाह वेदना का प्रभाव शब्दों के सहारे प्रस्तुत करने की कोशिश यहां देखने को मिलती है । इस पुस्तक को पढते समय ऐसा महसूस हो जाता है कि जैसे,

Deep grief sometimes is almost like a specific location,
a coordinate on a map of time.
When you are standing in that forest of sorrow,
you cannot imagine that you could ever find your way to a better place.
But if someone can assure
you that they themselves have stood in that same place, and now have moved on,
sometimes this will bring hope.

- Elizabeth Gilbert

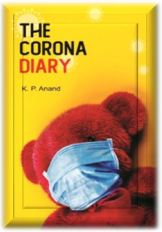

छोटे छोटे सात अध्यायों वाली इस पुस्तक की शुरुआत में उन्होंने अपने परिवार, माता-पिता और भाई-बहन के बारे में लिखा है । महालेखाकार, केरल के रूप में पद संभालते हुए उनकी आधिकारिक स्थिति हेतु अपने माता-पिता को चेन्नै में ही छोडकर, केरल में रहने के लिए वे कैसे मजबूर हुए, आदि का चित्रण किया है । एक सिविल सर्वेन्ट होने के नाते उन्हें अपनी आधिकारिक जिम्मेदारियां निभानी थी, फिर भी अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को उन्होंने कभी भी दूसरा दर्जा नहीं दिया । मार्च 2020 से राष्ट्रीय तालाबंदी लागू कर दी गयी, माता-पिता के अकेलापन और पिता की बिगडती हुई स्वास्थ्य से परेशान होकर वे चेन्नै के लिए रवाना हुए । उस दिन से लेकर एक के बाद एक उनके जीवन में घटित घटनाओं की मार्मिक अभिव्यक्ति है आनंद जी द्वारा प्रस्तुत यह आपबीती । लेखक की पत्नी का कोविड पोज़िटीव हो जाने के बाद घर वालों का क्वारंटाइन...पिता का अस्पताल में भर्ती हो जाना और उनका दु:खद निधन...फिर माता का अस्पताल में भर्ती.....कोविड पोज़िटीव हो जाना और दु:खद निधन...उनका स्वयं कोविड पोज़िटीव हो जाना...इसी दौरान लेखक ने अपनी दर्दनाक मानसिक स्थिति को एक

सुनियोजित ढंग से इसमें विस्तृत किया है । सबसे अवांछनीय क्षण यह था कि कोविड मृत्यू होने के कारण उनकी माँ के भौतिक शरीर को अस्पताल के बिस्तर से शवगृह और वहां से सीधे शमशान घाट तक ले जाया गया था । इतना ही नहीं वे माता-पिता के खो जाने के दु:ख से बाहर ही नहीं निकल सके, कोरोना ने दूसरी समस्या खडी कर दी, लेखक और उनके भाई भी कोविड के शिकार बन गए थे । निधन से जुडे धार्मिक अनुष्ठानों को पूरा करने से पहले ही दोनों भाईयों को अस्पताल में भर्ती होना अनिवार्य बन गया था । अस्पताल में दस दिन की चिकित्सा उपचार पूरा होने के पश्चात, दोनों भाइयों को एक कैदी की तरह रिहा कर दिया गया ।

यह कहा जा सकता है कि पारिवारिक सहयोग, घनिष्ठता और सुगठित पारिवारिक संबंधों का स्पष्ट स्रोत इस विचार को मज़बूत करता है कि रिश्ते-नाते ही समाज का मूल है । अपनी इस रचना में लेखक ने भी पारिवारिक संबंधों को अधिक महत्व दिया है । ज़िंदगी की कसौटी से निराश, निस्सहाय मानव अपनी परेशानियों में घनिष्ठ संबंधों का सहारा लेता है, यही इस पुस्तक का भी मूल है । आधुनिक समाज की न्यूक्लियर फैमिली को छोड कर यहां एक अविभक्त परिवार देखने को मिलता है, जहां भाई-बहन एक दूसरे के सहारा बन कर खडे हैं । कहीं भी उन्होंने अपने दु:ख के सामने दूसरों के दु:ख को कम नहीं दिखाया है बल्कि घर के सभी लोगों की परेशानियों को समझने की कोशिश की है ।

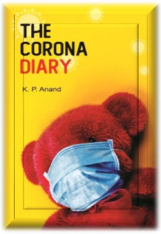

लेखक ने हर हालत और हर हालात में नियति को विपदा या दुर्भाग्य का रंग दिया है । यह तो सच है कि उन क्षणों में वे एक नकारात्मक दम घुटने वाली स्थिति से गुज़र रहे थे, फिर भी गहराई से देखें तो, उन विपरीत परिस्थितियों में भी प्रकाश की झलक मौजूद थी । माता-पिता का पलक झपकते ही खो जाना, एक व्यक्ति के लिए कल्पना से परे है । तो ऐसा एक पुत्र जो अपनी माँ के लिए अपनी जान तक न्योछावर करने के लिए तैयार था, उनका मानसिक तनाव कैसा रहेगा !.लेखक ने लिखा है-"मैंने, माँ को पानी की बूंदे दिए, सिर्फ जीभ को नम करने के लिए ।" उनके नज़रों के सामने ही माँ का प्राण पखेरू उड़ गया था ! ऐसी निर्मम स्थिति का वर्णन इस तरह किया है-"मैं अपने पिता के अंतिम तीन दिन का सामना कर सका था लेकिन मैं अपनी माँ के आखिरी तीन घंटे सहन नहीं कर पाया।" जैसे एक सिक्के के दो पहलू होते है वैसे जीवन के भी दो पक्ष होते हैं । उनके पिता ने भगवान के सामने अर्ज किया होगा कि अंतिम क्षण में पुत्र पास ही हो और ऐन मौके पर लेखक घर पहुँच गए । माँ-बाप के मन में यही इच्छा..... अभिलाषा होती है कि वृद्धावस्था में संतान साथ दें और सहारा बनें । इस कृति में आरंभ से

लेकर अंत तक माता-पिता के प्रति लेखक के मन में उभरती प्रेम.....श्रद्धा.....चिंता..... निष्ठा..... जैसे भाव प्रतिबिंबित होते हैं । लेखक नियति के नाटक से परेशान है, लेकिन अपने पुत्र धर्म निभाने में उनका साथ देते हुए नियति स्वयं लेखक के लिए भी भाग्यदाता बनी है।

इस भावात्मक विवरण में लेखक ने महामारी के प्रोटोकॉल और उपचारी प्रक्रिया का चित्रण विस्तार से किया है । कोविड को फैलने से रोकने के लिए तथा काबू में रखने के लिए नियंत्रण उपायों के कार्यान्वयन में विभिन्न हितग्राहियों के बीच के मतभेद का परिदृश्य भी इसमें चित्रित है। लेखक ने लिखा है- " एक रात माँ की तबीयत खराब हो गई, उनको सात-आठ बार शौचालय जाना पडा.....जब हमने इसकी जानकारी दी तब नर्सों ने बता दिया कि डॉक्टर के अनुदेशों के बिना कोई दवाई नहीं दिया जा सकता । दूसरे दिन सुबह दस बजे तक प्रतीक्षा करने के पश्चात् ही डॉक्टर आए और अपराह्न दो बजे माँ को दवाई दी गई।"

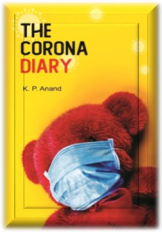

इस तरह के चुनौतियों के बावजूद भी सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली में उन्होंने अत्यधिक विश्वास प्रकट किया है, यह उनकी सज्जनता को दर्शाता है। लेखक के द्वारा महामारी के दौरान सामना की गई समस्याएं हमारे मन में उनके प्रति मात्र सहानुभूति ही नहीं बल्कि आदर का भाव और बढता है।

महामारी से केवल स्थान आधारित परिदृश्य बदलते रहते है। लेकिन दूनिया के हर कोने में लोग इन्हीं अवस्था से गुजर रहे है । लेखक की यह श्रद्धांजली उन तमाम लोगों के लिए प्रेरणा व संबल की मिसाल भी है जो किसी न किसी रूप में कोरोना महामारी के दुष्प्रभावों से पीड़ित थे या हैं। मुझे विश्वास है कि महामारी के साथ जीना सीखने में और आने वाले कल का सामना करने में यह अनुभव गाथा पाठक गण को सहायक सिद्ध होगी।

कोरोना महामारी –

नए बदलाव

राधिका टी वी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

हमने तो सोचा था वैश्विक तबाही का सबसे बडा खतरा तो तीसरे विश्व महा युद्ध से ही हो सकता है यह आम जनता के जेहन में कभी नहीं आया होगा कि एक वायरस पूरी दुनिया में तबाही मचा देगा । हालांकि तकनीकी दिग्गज बिल गेट्स ने अपने टेड टॉक्स में पूरी दुनिया को चेतावनी दी थी कि मानव राशि की तबाही के लिए किसी युद्ध या मिसायल के बजाय एक संक्रामिक वायरस सबसे अधिक खतरे का कारण बन सकता है । उनकी आशंकाएं सच साबित होने में अधिक समय नहीं लगा ।

कोरोना वायरस जिसे कोविड- 19 भी कहा जाता है, के सामने पूरा विश्व घुटना ठेककर खडा है। काम-धाम, पाठशालाएं, दूकानें, कारोबार सब कुछ बंद पड गए हैं....सफर पर रोक लगी है....ऐसा मानो कि जिंदगी की रवानी बंध हो गयी है । एक अतिसूक्ष्म अणु ने पूरे विश्व में उथल-पुथल मचा दी है..... दुनिया भर में लगभग 14 लाख लोगों को मौत के चंगूल में फंसा दिया है । कामयाबी की बुलंदियों पर खडा चिकित्सा विज्ञान जो क्लोणिंग, हृदय प्रत्यारोपण से गुजर कर अब मस्तिष्क प्रत्यारोपण की संभावनाएं खोज रहा है, एक नन्हे से वायरस के सामने बेबस खडा है और अभी तक उसे अपने काबू में करने के लिए कोई उपाय सूझ नहीं पाया है ।

कोरोना ने एक तरह से नहीं तो दूसरी तरह हम सब की जिन्दगियों में बदलाव लाया है । रोज नए-नए शब्दों से हम परिचित हो गए और वे हमारे दैनंदिन जीवन के हिस्सा बन गए... लॉकडाउन, क्वारैंटेन, आईसोलेशन, कंटेनमेंट, सोश्यल डिस्टन्स जैसे कई शब्दों से बच्चे-बूढे सब परिचित हो गए....मास्क और सैनिटाइसर के बिना हम घर से बाहर भी कदम नहीं रखने लगे । कोरोना से जुडे नयी हालातों का असर जो मानसिक स्वास्थ्य पर पडा है वह भी भयानक रहा। अकेलापन, निराशा, खिन्नता, कुंठा, वित्तीय ,गार्हिक जीवन, भविष्य, नौकरी आदि की सुरक्षा से संबंधित चिंताओं ने युवा एवं अधेड वर्गों को झकझोर किया तो स्वास्थ्य संबंधित डर और आशंकाएं वृद्ध जनों को हताश कर दी थी ।

एक तरफ दुनिया नकारात्मकता की आड में थम हो गयी थी तो दूसरी तरफ इस महामारी ने प्रतीक्षा के जो नए किवाड खुले हैं, उनको नजरअंदाज नहीं किए जा सकते । सबसे पहले कोविड से शैक्षिक क्षेत्र में जो परिणाम

लाया है, वह कमाल का रहा । कोरोना महामारी ने ऑनलाईन शिक्षा को नई दिशा दी। ऑनलाइन शिक्षा को महानगरों, छोटे शहरों यहां तक गांवों में भी स्वीकार्यता मिल गयी । शैक्षणिक संस्थाओं तथा बिसिनेस संगठनों ने कक्षाएं, कोचिंग तथा पाठ्यक्रम ऑफर करके ऑनलाइन शिक्षा को नयी ऊंचाईयों पर ले गए और अपने प्रेक्षकों को टांगके रखने के अभिनव उपाय अमल किए । भारत में प्रतियोगिता एवं प्रवेश परीक्षाओं में भाग ले रहे विद्यार्थियों और अपनी कुशलताओं को निखारने के लिए प्रोफेशनलों, ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करनेवालों की संख्या व्यापक रूप से बढ़ गयी।

रिपोर्टों के अनुसार मार्च में cyber security, cloud, DevOps, AI तथा डाटा विज्ञान पर पठ्यक्रमों की संख्या में अचानक 15 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। देश भर के स्कूलों में ऑन लाइन कक्षाएं शुरु हो गयी है और छात्र गण वर्चुअल तरीके से कक्षाओं में भाग लेने लगे हैं। स्कूलों द्वारा भरसक प्रयास किया जाता है कि वर्चुअल कक्षाएं असली और सामान्य कक्षाएं रहे और इस वजह से अनेक क्रियाकलाप और गृह कार्य से सक्रिय रखा करते हैं। ऑनलाइन न्यूज चैनल्स हो अन्य मनोरंजन कार्यक्रम हो या व्हाट्स एप्प, इंस्टाग्राम, ट्वीटर या टिक-टोक सभी आयु वर्गों में ऑनलाइन उपभोग प्रचलित हो गए। तनाव से मुक्ति पाने के लिए लोग घण्डों टेलिविजन के सामने पडे रहने लगे। चूंकि मनोरंजन की और कोई विधा मौजूद नहीं थी, टिक-टोक वीडियो बनाकर और यू-ट्यूबर्स बनकर बच्चों से बूढों तक रातोंरात स्टार्स बन गए। यू-ट्यूब से आय भी मिलता है इस वजह से यह आर्थिक तनाव से मुक्ति पाने का एक अच्छा तरीका भी था।

एक दूसरा महत्वपूर्ण बदलाव स्वच्छता को लेकर हुआ था । व्यक्तिगत स्वच्छता को हम बहुत ही गंभीरता से लेने लगे। हर मोड पर स्वच्छता को लेकर सावधानी बरतने लगे। हर दस मिनट में हाथ धोना, उपयोग से पहले कोई भी चीज सैनिटाइस करना जैसे हमारी आदत सी बन गयी और साफ-सफाई को लेकर लोग अधिक सतर्क रहने लगे। हेल्थ एवं हैजीन सामग्रियों के निर्माता इस अवसर का पूरा-पूरा लाभ उठाया और सार्वजनिक स्वच्छता को लेकर बडे-बडे अभियान चलाने लगे और इस आड में अपने उत्पादों का भरपूर प्रचार भी करने लगे । सार्वजनिक स्थानों पर थूकना दण्डनीय अपराध बन गया।

वर्क फ्रम हॉम यानि कि घर बैठे काम करने की अवधारणा नयी नहीं है। विदेश तथा भारत में भी कई आई टी कंपनियां यह तरकीब पहले भी आजमा चुकी हैं और सफल भी हो चुकी है । महामारी ने इस आशय को सार्वजनिक बना दिया और निजी कंपनियां ही नहीं सरकारी कार्यालय भी अपने कर्मचारियों से घर से ही काम करवाने के लिए मजबूर हो

गए । गार्हिक वातावरण भी इससे प्रभावित होने लगा और महिलाएं तो और भी अधिक परेशान हो गयी क्योंकि घर के काम-काज, बच्चों की देख-भाल और ऊपर से नौकरी के टार्गेट्स भी उनकी जिन्दगियों को निचोड के रख दिए थे। घर्रालय - घर और कार्यालय को एक करना यानिकि गार्हिक कर्तव्यों के बीच कार्यालय कार्य भी संभालना आसान नहीं है। लेकिन दोनों को बखूबी निभाने में वे माहिर हो गए।

अब धीरे-धीरे हमारी जिन्दगियां फिर से पुरानी पटरियों पर चलने लगी है। कुछ बदलाव तो अब भी बरकरार है लेकिन महामारी के समय की गयी सभी तबदीलियों को ज्यों का त्यों बनाए रखना मुमकिन नहीं है। निजी कार्यालय और दूकानें तो पहले से ही खुलने लगे थे सरकारी कार्यालयों में वर्क पैटर्न लगभग पुराना जैसा हो गया है । सरकारी पाठशालाएं भी खुल गयी है । लोग पुराने हादसे भूलकर नए वर्ष का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं ...नए वर्ष जो उमंगों का है नयी प्रतीक्षाओं का है। लेकिन वर्ष के अंत तक आते कोरोना वायरस की दूसरी लहर शुरु हुई है.....चीन, यूरोप, अमरीका में यह दूसरी लहर पहले से ज्यादा हलचल मचा रही है । कई देश फिर से लॉक डाउण में चले गए हैं।

लेकिन भारत जैसे एक देश के लिए फिर से एक बार लॉकडाउण में जाना नामुमकिन से कम नहीं है। क्योंकि उसके लिए जो दाम हमारे आम जनता को अदा करना पडेगा वह उनके बस की बात नहीं है । अब कोरोना वैक्सिन के आने की खबरों से फिर से हमारे मन में आशाओं की नयी किरणें उग गयी है। वैक्सिन से जुडे कई सवालों अफवाहों से हम परेशान जरूर है लेकिन अब हमें कम से कम यकीन तो आ गया है कि यह दौर भी गुजर जाएगा । आखिर उम्मीद पर ही तो दुनिया कायम है ....

विलीन

सुरेश कुमार आर,

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

वसुधा के वक्ष पर

यंत्रों से मैंने घाव बनाए

उसकी चीत्कारों को

अपनी ठहाकों में डुबो दिए

वहां जो खून बहा

उसमें इमारतें बनाकर

उसके अहम को ललकारा

परंतु उसके आंसुओं की बाढ़ में

अपनी रचना समेत मैं विलीन हो गया

आज़ादी

श्रीमती श्रीलता शारदा अम्मा
हिंदी प्राध्यापक
हिंदी शिक्षण योजना

"देवी बिटिया....."

वह खाने की मेज़ पर रखे गिलास में पानी ले रही थी । डैडी को गोलियाँ देनी थीं । तभी धीमी आवाज़ में उन्होंने पुकारा था । उसने सिर उठाया। "क्या हुआ डैडी ?"

"तुम्हारे, शाम को स्कूल से वापस आते वक्त, मैं शायद यहां दिखाई नहीं दूँगा । हाँ, वृद्धाश्रम में...।"

उनका गला रुँध गया था, पर स्वर दृढ़ था । पल भर में देवी का मन पिघलने लगा । उसकी आँखों से बारिश की बूँदें टपकने लगीं । दिल का सुर बारिश के सुर से मिला। वह मुंह नीचा कर फर्श पर नज़र दौड़ाकर खड़ी हो गई। न जाने कितनी, कितनी देर.....तब जाकर किसी आवाज़ ने उसे जगाया । वह देख रही थी- खाना अधूरा छोड़ते हुए, मेज़ पर अपनी उँगलियाँ दबाकर, वे धीरे- से उठ रहे थे। डैडी पिछले नवंबर में नब्बे साल का अशांत जीवन पूरा कर चुके थे । उनकी यही हालत.....एक तरफ वे रोगों से पीड़ित । दूसरी तरफ उपेक्षित जीवन.....हाय रे ज़िन्दगी...

भारी दिल से वह उस अधूरे खाने की तरफ एकटक देखने लगी । वह जानती ही थी कि आज उनका खाना खाना मुश्किल ही था । और कोई दिन हो तो वे पूरे मज़े से खा लेते। छोले - भटूरे उनका बहुत प्रिय व्यंजन था ।

"टीचर पुकार कर मैंने तुमको अलग नहीं किया था", मुस्कान के साथ वे आगे बढ़ने लगे । "सचमुच तुम मेरी अपनी बेटी हो । तुम्हारे, स्कूल से वापस आते वक्त शायद मैं...." वे पूरा नहीं कर पाए । डंडे के सहारे अपने टेढ़े-मेढ़े शरीर को सीधा करते हुए, वे नल की तरफ़ चलने लगे । देवी के अंदर से एक कराह निकली । वह ज़ोर से चीखना चाहती थी । डैडी के अंदर क्या चल रहा होगा? क्या वृद्धाश्रम की चहरदीवारी में वे अपने को कैद करने के लिए तैयार हैं ? देवी ने आँखें पोंछ लीं।

डैडी अपने कमरे में पहुँच चुके थे ।

देवी के मन में परसों की यात्रा की तस्वीर उभरी । जीवन में पहली बार किसी वृद्धाश्रम तक की यात्रा, वह भी डैडी के साथ.... वह जाने को तैयार नहीं थी । पर उनके साथ निकलने के लिए मजबूर हो गई । उनकी बेटी कमला ने उसे विवश किया था, क्योंकि वह

अकेली थी । बड़े भाई, जो साथ रहते हैं, ने पहले ही साफ़-साफ़ इंकार कर दिया था कि वे साथ नहीं जाएंगे । कार चलाने के लिए और कोई नहीं था । तीन बच्चे हैं उनके । बड़े भाई बेंगलूरु में कारोबार में लगे हैं । दूसरे, सेना से रिटायर होकर आए थे । सरकारी कार्यालय में दूसरी नौकरी लगी है । कमला इन दोनों से छोटी है। वह घर में अपनी पोती को पाल रही है । उसकी बेटियाँ शादी-शुदा होकर विदेश में रहती हैं । पोती को उसके यहाँ छोड़ा है। सब तो मज़े में हैं । सिर्फ डैडी ही वहाँ पुराने नज़र आते हैं । सच में वे उस घर में पराये लगते थे । अपना होकर भी पराया लगना उनके लिए कोई अजीब बात नहीं थी ।

ज़िन्दगी भर उनको तिरस्कार मिला होगा । उनको छोड़कर बाकी सभी को अपनी अपनी ज़िन्दगी प्यारी थी । बड़े भाई का परिवार बेंगलूरु में सकुशल था । मंझला भाई बीबी की उँगलियों पर नाच रहा था । बेटी की मनोदशा भी डैडी के लिए अनुकूल नहीं थी । मतलब है, डैडी उनके लिए कोई अन्य ग्रह के जीव थे । दुनिया क्या कहेगी , सिर्फ इस वजह से उनकी देखभाल हो रही थी ।

कभी- कभी उसने देखा था कि डैडी हाथ पांव धोकर खाने की मेज़ पर बैठे, उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं और कमला अपने पलंग से उठने और उन्हें खाना परोसने में जान - बूझकर देर लगा देती है । उसे स्वयं कमला से कहना पड़ता था कि उन्हें भूखे न बैठने दे । बेचारे डैडी। घर की चार दीवारों के अंदर उनका दम घुट रहा होगा। वृद्धाश्रम इससे कहीं बेहतर होगा । असल में उस घर में देवी का कदम रखना, सूखी ज़मीन पर वर्षा बरसने जैसा था । वह उनकी पड़ोसन थी । जब वह घर का दरवाज़ा खोलकर अंदर झांकती तब वहाँ उनके मुख पर उजाला फैलता था । उसे लगता था कि सचमुच डैडी उसके इंतज़ार में बैठे हैं ।

"पेंशन कार्यालय में खड़े होते समय अफसर ने पूछा," गाड़ी में बैठते हुए उन्होंने कहा, "क्या आपके कोई बेटा - बेटी नहीं हैं? "

"हाँ जी, हैं । तीन बच्चे । दो बेटे और एक बेटी।"

"जब कभी मेरे सामने आते हैं, आप अकेले ही दिखते हैं । वे आपको अकेले क्यों भेजते हैं ?"

"अरे जनाब, वे अपने-अपने काम-धंधों में लगे हुए हैं । मुझे अकेले नहीं, आटो वाले के साथ भेजते हैं । "दर्द का घूँट पीते हुए, डैडी ने देवी से कहा ।" नब्बे साल का यह बूढ़ा ही वहाँ अकेले दिखता है ।"

दर्द पर सन्नाटे का पर्दा ओढ़ते हुए, देवी ने कार का गियर बदल दिया । वे वृद्धाश्रम पहुंच चुके थे । कमला कार से निकलकर प्रबंधक से बात करने चली । थोड़ी देर बाद वापस आकर देवी को भी साथ लिया । दोनों मिलकर डैडी के लिए आरक्षित कमरे में चलीं और सुविधाएँ देखकर तृप्त हुईं ।

कार में डैडी अकेले थे इसलिए देवी वापस जाकर उनके संग बैठने लगी ।

डैडी ने आग्रह किया- "क्या मैं भी ज़रा देख लूँ कमरा कैसा है?"

"डैडी वह तो दूसरी मंज़िल पर है । सीढ़ियाँ चढ़ने में आपको दिक्कत होगी । जो भी हो, अगले हफ्ते यहाँ भर्ती होना ही है न? तब हम दोनों मिलकर आपको चढ़ा देंगी ।"

"ठीक है, ठीक है । एक बार चढ़े तो फिर उतरने की बात ही नहीं आती न? "वे मज़ाक करने लगे । दोनों हँसने लगे ।

प्रबंधक से किराया और डिपॉज़िट की बात पक्की कर कमला भी वापस आई । प्रबंधक उनके दोस्त थे । इसलिए ज़्यादा पेशकश नहीं हुई । प्रबंधक ने हँसते हुए देवी से कहा "दीदी, कार को पीछे की तरफ लाकर सड़क की तरफ मुड़ाना आपके लिए मुश्किल होगा । लाओ, मैं कर देता हूँ ।" और उन्होने सुझाया कि डैडी को दीवाली के एक दिन पहले वहाँ लाएँ क्योंकि उस दिन वे वहाँ दावत आयोजित कर रहे हैं, डैडी भी उसका आनंद लें ।

"ठीक है," कमला ने कहा । देवी चालक की सीट पर बैठकर डैडी की तरफ़ देखने लगी । उनका चेहरा सूखा था । न दर्द, न खुशी । एकदम शांत । उस दिन रात को वह सो नहीं पाई । दिल में कुछ चुभता-सा...डैडी के अलावा उसका कोई भी नहीं था । दो ही महीनों का परिचय है उनसे । वे उसके पड़ोसी बनकर आए थे । उसी समय उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई । सभी उनसे मिलने वहाँ आते जाते थे । वह भी उसी कारण उनसे मिलने गई। वे अकेले थे, उदास । समय से समझौता कर बैठे थे । देवी के मन में अनजाने ही अपने पिता जी की यादें उभरीं । अगर वे ज़िन्दा होते तो यही उम्र होती । वही चेहरा.... वही मुस्कान..... क्या वे दुबारा आकर सामने बैठे हैं? बातें करते-करते वह बड़ी देर तक उनके पास बैठी । वापस जाते समय उन्होंने याद दिलाया- "कल ज़रूर आना, टीचर । बातें करते करते मुझे लगा कि तुम सचमुच अपनों में से कोई हो। "उसे लगा कि वे अपने दिल की बात कह रहे हैं। वह अगले दिन उनके पास गई। फिर उसके आगे, वह उसकी दिनचर्या बन गई । उसे लगा कि यह जन्मों का रिश्ता है । उसे देखते ही डैडी का चेहरा खिल उठता था । रात को खाने की प्लेट उठाकर पड़ोस में जाना नियमित हो गया तो बच्चे जल गए । "अम्मा, यह क्या कर रही हैं? और कोई काम नहीं है क्या? " उसने अनसुना कर दिया। उसने अंदर ही अंदर जवाब दिया कि यह बाप बेटी का रिश्ता है । बीच में और कोई न आए ।

बेटी शिकायत करने लगी कि अम्मा उसकी कुछ सुनती नहीं । बेटे ने शिकायत की, कि अम्मा पड़ोस में घंटों बिता रही हैं ।

उसे लगा कि वह अपने पिताजी के साथ है । उनका साथ दे रही है । ये बुज़ुर्ग हमारी संपत्ति हैं । जीवन की सबसे मूल्यवान धरोहर ।

अंदर डैडी खाँस रहे थे । वह सपनों की दुनिया से वापस आई । उनका स्वास्थ्य गिरता जा रहा है । आगे क्या होगा? वृद्धाश्रम में उनका क्या होगा ???

घड़ी साढ़े नौ बजाने लगी तो उसे फ़िक्र हुई कि

अब स्कूल जाना है । स्कूल पास ही है । वह दौड़कर दो मिनिट में वहाँ पहुँच गई । अगले पीरियड में ही क्लास है । वह पंखे के नीचे बैठ गई । पसीना पोंछते समय किसी की आवाज़ सुनाई दी- "देवी बिटिया... "कहीं डैडी की आवाज़ तो नहीं ?

तभी मोबाइल की घंटी बजी । उसने देखा, कमला का कॉल है । शायद डैडी को छोड़ने का वक्त आ गया होगा। एक बार फिर वे बुला रहे होंगे..... देवी ने झटपट फोन उठाया । ....."हेलो, डैडी....."

"देवी, मैं हूँ कमला । जल्दी आ जा"....उसकी आवाज़ में घबराहट थी ।

"क्या हुआ ? "देवी भी परेशान हो गई ।

जवाब में उसकी चीख सुनाई पड़ी ।

देवी को लगा कि जाली दुनिया को चीरकर डैडी उड़ रहे हैं..... नीले-नीले पंख पसारते हुए..... दूर.... दूर आसमान में ।

एस ए एस परीक्षा में रैंक प्राप्त पदाधिकारीगण

श्रीमती राजी सी बी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री जितिन जी एस
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

स्वतंत्रता दिवस समारोह की झलकियाँ

कोरोना के कारनामे

सादत हुसैन रिज़वी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

कोरोना तू आया तो आया लेकिन पूरी दुनिया को बदल के रख दिया बहुत बद्दुआ लगेगी तुझे हम इंसानों की, बचेगा नहीं तू.. सत्यानाश हो जाएगा तेरा ! लेकिन सुन ले कोरोना जब हम लोग सड़क किनारे पानी-पुरी खा कर के, पैन्ट्री कार के दूषित खाने को खाने के बावजूद ज़िन्दा रह जाते हैं तो तू किस खेत की मूली है....!!

पहले हम इंसान सिनेमाघर में 300-300 की पॉपकार्न बेच कर लूटे जाते थे तूने सारी टॉकीज़ें ही बंद करवा दी, सड़क किनारे पानी-पुरी खाने का मज़ा भी तुझसे देखा नहीं गया, एक इंसान अपने बढ़े नाखूनों से खराब आलू को सस्ते तेल में तली 'शुद्ध' पानी-पुरी हमें दिया करता था तुझसे देखा नहीं गया। अरे ट्रेन में पैन्ट्री कार वाले कई दिन बासी समोसे, बड़े बेचा करते थे बिना दूध और न के बराबर शक्कर की रद्दी क्वालिटी की चाय...तूने ट्रेनें ही छीन लीं हम महरूम हो गए पेन्ट्री कार से।

हम जानते हैं कि टूरिस्ट जगहों के रेस्टोरेंट वाले खाने के बिल में लूटते थे तूने अपने कर्मों से रेस्टोरेंट तो क्या पर्यटन ही छीन लिया। पहले हम लोग घर भर-भर के शादियों में टूट पड़ते थे और कभी लम्बी लाईन में लग के गुलाब जामुन पाकर खुद को खुशनसीब समझा करते थे लेकिन तूने वो गुलाब जामुन की मिठास ही छीन ली अब तो पहले 50 मेहमानों की सूची में आओ ये पहली शर्त है अरे तुझसे देखा नहीं गया हम लोग आई पी एल का मज़ा लेने के लिए महंगी टिकट खरीदते थे तूने वो भी दुबई ले गया।

कभी किसी ने सपने में भी नहीं सोचा था कि गोरखपुर जाने वाली राप्तीसागर एक्सप्रेस के जनरल कोच में जगह मिलेगी तूने जनरल के कोच को भी रिज़र्वेशन वाला बना दिया, मास्क अरे भैया मास्क तो हमने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि पहनेंगे! अरे हम हैलमेट नहीं पहनते थे कभी ज़िन्दगी में और मास्क लगाएंगे.!! लेकिन तूने मास्क को पहनने वाले कपड़ों सूची का स्थायी सदस्य बना दिया। नरक की आग में भूना जाएगा रे तू।

हम छुट्टी के लिए तड़पते रहते थे कि कब मौका मिले और छुट्टी का मज़ा लें, कसम से नफ़रत सी हो गई है छुट्टी के नाम से। घर में रह रहकर लोग इतना लड़े इतना लड़े कि नौबत तलाक तक आ गई अरे कोई घर में इतना भी रहता है क्या... सुबह से शाम तक एक दूसरे की शक्ल देखेंगे और देखते ही रहेंगे तो लड़ेंगे ही न!!! स्कूल वाले महंगी फ़ीस लेकर हम लोगों के बच्चों को 'टू वनज़ा टू' सिखा रहे थे और कोचिंग

वाले हज़ारों बेरोज़गारों को सरकारी नौकरी के नाम पर भेड़-बकरी बना कर बैठा के एक बड़े से हाल में पढ़ाते थे तूने वो भीड़ ही छीन ली बल्कि कोचिंग के अस्तित्व पर ही सवाल खड़ा हो गया। गुटखा-पान खाने वाले तो तरस ही गए लेकिन बेचने वालों की चांदी हो गई...5 रूपये के पाउच अपनी हैसियत से कई गुना दाम में बिके। और शराबियों का तो पूछो मत उनको तो जाम का एक क़तरा भी मिला है न तो उन्होंने उसे अमृत समझ के सिर झुकाकर पिया है, बेचने वालों ने ब्लैक में बेच-बेच के अच्छी खासी दौलत जमा कर ली। वो पति जो घर मे काम करने को अपनी तौहीन समझते थे उनका घमंड भी जाता रहा बल्कि वो अपनी बीवी से अच्छा खाना बनाना सीख गए। अरे यही नहीं लोगो को इतना वक़्त मिला कि गुडडे बिस्किट में कितने काजू हैं लोगों ने ये तक गिन लिया।

शुरू में लॉकडाउन लगा, लोग घरों में बोर होने लगे तो बाहर घूमने निकले लेकिन उन्हें क्या पता था कि बाहर पुलिस वाले भी डंडे लेकर बोर ही हो रहे हैं...जबरन पिट गए बेचारे!! जिसने ज़िन्दगी में कभी अंग्रेज़ी का 'अ' भी नहीं सीखा था वो भी सोशल डिस्टेंन्सिंग, मास्क, सैनिटाईज़र, क्वारन्टाईन जैसे कुटिल अंग्रेज़ी शब्द सीख गए। सैनिटाईज़र ने तो वो इज़्ज़त पाया जो महंगे साबुन डिओ परफ़्यूम भी न पा सके वर्ना आम आदमी तो सैनिटाईज़र को पहचानता तक नहीं था। और भैया डेटॉल जैसी शोहरत तो आज तक संसार में किसी चीज़ को नसीब ही नहीं हुई।

पहले हवाई जहाज़ में सफ़र करने वाला शान बघारता था, स्टेटस दिखाता था कि फ़्लाईट से आया हूं लेकिन अब ऐसे छुपकर अपने मोहल्ले में आता है जैसे कोई गुनाह करके आया हो! यहां तक कि पड़ोसियों को भी पता नहीं चलता कि कब और कहां से आया। भला हो फ्री के 2 जीबी इंटरनेट का, वो नहीं होता तो हम लोगों की तो दुनिया ही उजड़ जाती हम तो आपस में लड़ते ही रहते जैसे किंग्समैन फ़िल्म में लोग मोबाईल के कारण आपस में लड़े थे...तेरे कारण सबसे ज़्यादा मौज तो स्कूल जाने वाले बच्चों की हुई मां बाप भी बेचारे मुंह ताकते रह गए कि बच्चों को पढ़ने के लिए कैसे बोलें....हफ़्ते के दिनों में जिस रविवार की इज़्ज़त संसार में सबसे ज़्यादा थी तूने वो भी खा गया अब तो हर दिन रविवार जैसा ही हो गया। लॉकडाउन के कारण जो लोग किसी रिश्तेदार के यहां फंसे रह गए उन मेज़बानों की तो हालत ख़राब हो गई मेहमानों को झेलते-झेलते। और जो विदेशी, परदेस में फ़ंस गए थे वो तो जूतों से तौबा कर रहे हैं कि भूले से अब कहीं घूमने का नाम नहीं लेंगे..उनमें अचानक स्वदेस से प्यार हो गया। ख़ैर कोरोना तू सुन ले हम लोग तुझ पर भी विजय प्राप्त करेंगे, तेरा नामोनिशान मिटा देंगे.. वैक्सीन आते ही हम इंसानों के फिर से अच्छे दिन आने वाले हैं !!

आज़ादी की लड़ाई की अनसुनी कहानी

कुयिली

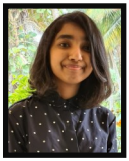

के एस मीनाक्षी
सुपुत्री श्रीमती आशा जे आर
हिंदी अधिकारी

हमारे ज़हन में जब भी इतिहास की योद्धा महिलाओं का ख़्याल आता है ख़ासतौर से भारतीय इतिहास के मामले में तो हमारी सोच का दायरा झांसी की रानी लक्ष्मी बाई या ज़्यादा से ज़्यादा रज़िया सुल्तान तक ही सीमित रह जाता है या कहें कि इनसे ज़्यादा नाम हमारे ज़हन में आते ही नहीं। इसी वजह से हम ग़लतफ़हमी का शिकार होकर ये मान लेते हैं कि भारतीय महिलाओं का इतिहास उत्पीड़न एवं सहनशीलता के इर्द-गिर्द ही बुना गया है।

इंसानियत की तारीख़ से धुंधली होती नारी शक्ति के गौरव की दिलफ़रेब कहानियों को हम भुला ही देते अगर हम और ज़्यादा हैरानी और दिलचस्पी से ये जानने को उत्सुक न होते कि उनकी अक्लमंद निगाहों में जाबाज़ी से भरा इतिहास छुपा है।

इतिहास की किताबें 1857 के सैनिक विद्रोह को अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ देश की आज़ादी के पहले स्वंत्रता संग्राम के रूप में याद करती हैं, लेकिन इस शानदार घटना के 77 वर्ष पूर्व तमिल वंश की रानी वेलु नचियार ने कलोनियल शासन के विरुद्ध युद्ध किया और उन पर विजय प्राप्त की। दुर्भाग्य से वेलु नचियार की कहानी ही एक राज़ बन कर दफ़न हो गई तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि उनकी सेनापति कुयिली की कहानी भी गुमनामी के अंधेरों में खो गई।

कुयिली का जन्म दलित समुदाय की अरुंधतियार जाति में एक गरीब किसान परिवार में पेरियमुत्तन और राकु की बेटी के रूप में हुआ। बेख़ौफ़ होकर एक जंगली जानवर से बहादुरी से मुकाबला करते हुए अपने खेतों को बचाने की कोशिश के दौरान उसकी माँ को

अपनी जान गंवानी पड़ी। पेरियमुत्तन ने अपनी बेटी की परवरिश माँ के दिलेरी व बहादुरी के किस्से सुनाकर की । अपनी माँ के साहस के किस्से का उस पर गहरा प्रभाव पड़ा ।

1772 में अंग्रेज़ों की मांगें नहीं मानने पर शिवगंगा राज्य के राजा तेवर को अंग्रेज़ो ने मार दिया और राज्य पर अपना कब्ज़ा कर लिया । रानी वेलु नचियार अपने नवजात शिशु और बचे हुए कुछ सेवकों के साथ अपने पति की मौत के बदले की भावना के साथ एवं अपने राज्य को वापस लेने का प्रण लेकर नज़दीकी गाँव विरूपाक्षी भाग गईं ।

इसी दौरान पेरियमुत्तन रानी के सेवक के रूप में नियुक्त किया गया जो रानी और कुयिली को करीब लाया । कुयिली ने कई मौकों पर अपनी ज़िन्दगी की परवाह किए बग़ैर रानी की जान बचाई जिससे रानी के मन में उसके प्रति विशेष लगाव पैदा हुआ । ऐसी ही एक घटना हुई जब कुयिली को पता चला कि उसकी "शिलंबम" (हथियार आधारित युद्ध कला) शिक्षक वास्तव में रानी के ख़िलाफ़ काम करने वाला एक जासूस है, सो तुरंत ही कुयिली ने उसको मार डाला ।

रानी के सोने के दौरान उन पर जानलेवा हमला हुआ कुयिली ने अपनी जान की परवाह किए बिना खुद घायल होते हुए रानी की जान बचायी । कुयिली की वफ़ादारी और साहस से प्रभावित होकर रानी ने उसे निजी अंगरक्षक के रूप में नियुक्त किया ।

हैदर अली और मरुतु पाण्ड्यार भाईयों के साथ एक मज़बूत गठबंधन बनाने के बाद रानी वेलु नचियार ने तय किया कि अंग्रेज़ों के साथ युद्ध करने एवं अपने खोये हुए राज्य को हासिल करने का वक़्त आ गया है । संयोगवश इसी समय ही नवरात्रि उत्सव मनाया जा रहा था । नवरात्रि के दशमी के दिन शिवगंगा किले के भीतर के राजराजेश्वरी अम्मन मंदिर में राज्य भर की महिलाएं इकट्ठी होती थी । कुयिली ने इस सुनहरे अवसर का लाभ उठाते हुए हमले की योजना तैयार की ।

त्योहार का दिन आया । त्योहार की रंगीनियों में खोई हुई भीड़ में ग्रामीण स्त्रियों की तरह वेषभूषा पहनकर कुयिली, वेलु नचियार की समूची महिला सेना और अपने हथियारों को फूलों और फलों की टोकरियों में छिपाते हुए किले के बाहर खड़े अंग्रेज़ी सैनिकों की नज़रों से बचकर बड़ी चालाकी से किले के भीतर मंदिर में दाख़िल हुई और रानी की आज्ञा से अंग्रेज़ो पर आक्रमण कर दिया।

अंग्रेज़ी सेना इस अचानक हुए हमले के लिए तैयार नहीं थी, इसी बीच कुयिली को ये पता था कि अंग्रेज़ों के हथियार और अग्नेयशस्त्र वास्तव में बहुत ही ताकत वाले व उन्नत हैं और उन्हें पूरी तरह से निर्बल करने के लिए उनके गोले-बारूद के भंडार को तबाह करना ही होगा ।

अंग्रेज़ों के हथियार भंडार का पता लगाकर कुयिली ने त्योहार के दीपक जलाने के लिए लाए घी और तेल से खुद को सराबोर कर लिया और अपनी जाबांज़ सेना की मदद से खुद को आग लगा ली।

भीषण युद्ध की प्रचंड आग में शस्त्रागार में छलांग लगाकर उसने अंग्रेज़ो के गोलाबारूद के ज़ख़ीरे को राख कर दिया और भारतीय इतिहास की पहली आत्मघाती हमलावर बनने का गौरव हासिल किया । हाल ही में तमिलनाडु सरकार ने कुयिली की बहादुरी की याद में शिवगंगा में एक स्मारक स्थापित किया। हालांकि उनकी बहादुरी की वैसी कद्र नहीं की गई, लेकिन कुयिली ने हमारे देश के इतिहास को गढ़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

हमें ज़रूरत है इन सभी ऐतिहासिक चरित्रों के बारे में पढ़ने और जानने की जिन्होंने अपने सर्वोच्च बलिदान से हमारे इतिहास को अभिभूत किया।

महालेखापरीक्षक की रिपोर्ट (राजस्व क्षेत्र) - वर्ष 2019 की रिपोर्ट सं.3 का पर्यावलोकन

संविधान के अनुच्छेद 151 के तहत राज्य विधान सभा में प्रस्तुत करने से पहले राज्यपाल को समर्पित करने के लिए भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की यह रिपोर्ट तैयार की जाती है।

इस रिपोर्ट में राजस्व क्षेत्र के तहत आने वाले केरला सरकार के विभागों जिनमें राज्य माल और सेवा कर विभाग, राजस्व एवं आपदा प्रबंधन विभाग, परिवहन विभाग, पंजीकरण विभाग तथा उत्पाद शुल्क विभाग आदि समाविष्ट हैं, की निष्पादन लेखापरीक्षा एवं अनुपालन लेखापरीक्षा के महत्वपूर्ण परिणाम अंतर्निहित है।

इस रिपोर्ट में उल्लिखित मामले, वे हैं जो वर्ष 2017-18 के दौरान लेखापरीक्षा के ध्यान में आए हैं, और वे भी हैं जो पूर्व वर्षों में ध्यान में आए तो थे लेकिन पिछली रिपोर्टों में समाविष्ट नहीं किए गए। जहाँ आवश्यक लगे, वर्ष 2017-18 के बाद की अवधि के मामले भी शामिल किए हैं।

भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक द्वारा जारी लेखापरीक्षण मानकों के अनुरूप लेखापरीक्षा आयोजित की गयी थी। इस रिपोर्ट में ₹938.56 करोड़ का राजस्व प्रभाव को समाविष्ट करनेवाले एक निष्पादन लेखापरीक्षा तथा 17 अनुपालन लेखापरीक्षा रिपोर्ट सहित 18 पैराग्राफ हैं। मुख्य निष्कर्षों में कुछ नीचे दिए गए हैं:

I. सामान्य

वर्ष 2017-18 के लिए राज्य सरकार की कुल राजस्व प्राप्तियां पिछले वर्ष के ₹75,611.72 करोड़ रुपए के बजाय ₹83,020.14 करोड़ रुपए थे। इसका 69 प्रतिशत राज्य द्वारा कर राजस्व (₹46,459.61 करोड़) के तथा करेतर राजस्व (₹11,199.61 करोड़) के माध्यम से उत्थित किया गया था। शेष 31 प्रतिशत, भारत सरकार से प्राप्त विभाज्य संघ करों (₹16,833.08 करोड़) तथा सहायता अनुदान (₹8,527.84 करोड़) में राज्य का शेयर था।

(पैराग्राफ 1.1.1**)**

31 मार्च 2018 के अनुसार राजस्व के कुछ प्रधान शीर्षों पर राजस्व की बकाया राशि ₹14,904.91 करोड़ थी जिसमें से ₹5,514.14 करोड़ पांच वर्षों से अधिक अवधि के लिए बकाया थे।

(पैराग्राफ 1.2**)**

जून 2018 के अंत में, विभिन्न विभागों के संबंध में, ₹8,575.04 करोड़ के धन मूल्य को शामिल करने वाले 926,690 टिप्पणियों से युक्त निरीक्षण रिपोर्टें (नि.रि.) बकाया थीं।

(पैराग्राफ 1.7)

II. बिक्री, व्यापार आदि पर कर/ मूल्यवर्धित कर

एस जी एस टी विभाग में अपीलों का निपटान तथा अपीलीय आदेशों के कार्यान्वयन का तंत्र

के वी ए टी आई एस अपीलीय मॉड्यूल की अनुपलब्धता के कारण विभाग अपीलीय प्राधिकारी स्तर पर अपीलों की प्राप्ति तथा निपटान तथा निर्धारण प्राधिकारियों के स्तर पर उसके कार्यान्वयन का अनुवीक्षण नहीं कर सका जिसकी वजह से लंबित अपीलीय मामलों की भरमार हो गयी थी। **(पैराग्राफ** 2.4.1)

42 निर्धारण परिमण्डलों में, 557 व्यापारियों द्वारा अप्रैल 2016 से जून 2017 तक की अवधि के लिए विवादित कर का 20% का प्रेषण करने के बाद न कोई अपील फाईल की गयी थी और न ही विभाग द्वारा ₹10.57 करोड़ की राशि के राजस्व के गैर-वसूली में परिणत राशि की वसूली हेतु वसूली कार्रवाईयां शुरु की गई थी।

(पैराग्राफ ₹2.4.2)

43 निर्धारण परिमण्डलों में, प्रथम अपीलीय प्राधिकारियों द्वारा निपटाए गए ₹372.59 करोड़ के कर प्रभाव से युक्त ₹479 अपीलीय मामले संबंधित निर्धारण प्राधिकारियों के पास आशोधन/ निपटान हेतु लंबित रह गए थे।

(पैराग्राफ 2.4.3)

कर की अल्प उगाही

गलत कर दर लागू करने के कारण ₹21.74 करोड़ की राशि के कर की अल्प उगाही; आठ दृष्टांतों के कर निर्धारण तथा परिकलन से कुल आय बचने का तथ्य ध्यान में आया।

(पैराग्राफ 2.5)

₹258.57 करोड़ के मूल्य वाले एक्स्ट्रा न्यूट्रल आल्कहॉल (ई एन ए) के आवक आपूर्ति पर एकीकृत माल एवं सेवा कर (आई जी एस टी) के गैर-उगाही ₹46.54 करोड़ परिकलित किए गए थे जिसका 50% यानि कि ₹23.27 करोड़, केरला सरकार को प्रभाजन के तौर पर प्राप्त किया जाना है। **(पैराग्राफ** 2.6)

III. वाहनों पर कर

केरला रोड सेफ्टी अथॉरिटी का कार्य- रोड सुरक्षा निधि के तहत संग्रहण तथा उपयोग

लेखापरीक्षा द्वारा देखी गयी थी कि संविधियों में व्यक्त प्रावधान होने के बावजूद, 2008-09 से 2017-18 तक की अवधि के दौरान केरला रोड सेफ्टी अथॉरिटी में ₹435.51 करोड़ की राशि का अल्प अंतरण हुआ था।

(पैराग्राफ 3.4.2.1)

पुलिस विभाग द्वारा कंपाउंडिंग शुल्क के व्यपवर्तन तथा नामोद्दिष्ट लेखा शीर्ष में कंपाउंडिंग शुल्क के गैर प्रेषण के परिणामस्वरूप के आर एस एफ को ₹15.57 करोड़ के शेयर की हानि हुई।

(पैराग्राफ 3.4.2.2)

कर की अल्प उगाही

17 में से 15 क्षेत्रीय परिवहन कार्यालयों में तथा 55 में से 45 उप क्षेत्रीय परिवहन कार्यालयों में परिवहन वाहनों से गैर-परिवहन वाहनों की श्रेणी में पुन:वर्गीकृत वाहनों पर एक मुश्त कर की अल्प उगाही 2092 मामलों में ₹2.06 करोड़ रही।

(पैराग्राफ 3.5**(ए))**

17 में से 12 क्षेत्रीय परिवहन कार्यालयों में परिचालित अवधि (जिस अवधि के दौरान गैर उपयोग सूचना फाईल नहीं की है) के दौरान ₹43.79 लाख रुपए के 139 मकाम वाहनों द्वारा कर का गैर-प्रेषण। **(पैराग्राफ** 3.7)

IV. भू-राजस्व एवं भवन कर

केरला में भू- सीमा एवं अधिशेष भू-प्रबंधन का कार्यान्वयन

विभाग द्वारा कोई ताल्लूक/ ताल्लूक भूमि बोर्ड वार उच्चतम सीमा मामलों, रियायती भूमि और राज्य के अधिशेष भूमि के विस्तृत डाटा बेस का अनुरक्षण नहीं किया जाता था जो कि अधिशेष भूमि के पहचान, संरक्षण तथा उपयोग हेतु अति महत्वपूर्ण है।

(पैराग्राफ 4.4.1)

पांच चुने गए ज़िलों में 89 उप रजिस्ट्रार कार्यालयों में से 43 में, 184 पंजीकृत दस्तावेज़ों में शामिल 6.0702 हेक्टर (15 एकड़) से अधिक भूमि से 5,192.4161 हेक्टर की भूमि (दस्तावेज़ों के अनुसार ₹311.35 करोड़ के मूल्य की), राजस्व विभाग द्वारा उच्चतम सीमा के मामले पर कार्रवाई शुरु करने के लिए पहचानी नहीं गयी।

(पैराग्राफ 4.4.2)

12574.5135 हेक्टर भूमि से संबंधित 372 मामलों में से 358 (96.24 प्रतिशत) मामलों में 6.0702 हेक्टर (15एकड़) से अधिक भू धारण से संबंधित भू कर भुगतान ब्योरे स्वीकार करते समय उच्चतम सीमा से अतिरिक्त भूमि की रिपोर्ट विभाग द्वारा नहीं की गयी थी।

(पैराग्राफ 4.4.3)

ताल्लूक कार्यालय (टीओ)/वी ओ द्वारा संबंधित टी एल बी को उच्चतम सीमा से अतिरिक्त भूमि होने के तौर पर रिपोर्ट किए गए 197 मामलों में से, 2414.7317 हेक्टर भूमि (उचित मूल्य के अनुसार ₹499.44 करोड़ मूल्य की) से संबंधित 114 मामलों के (57.87%) संबंध में कोई उच्चतम सीमा मामले पर कार्रवाई शुरु नहीं की थी। **(पैराग्राफ** 4.4.4)

संबंधित टी एल बी/ ताल्लुक/वी ओ के प्रतिनिधियों के साथ किए प्रत्यक्ष सत्यापन में प्रकट हुआ कि 67 मामलों में से 33 में 239.1020 हेक्टर भूमि (उचित मूल्य के अनुसार ₹189.73 करोड़ के मूल्य की) की सीमा तक की छूट का उल्लंघन अनिर्धारित रहा। **(पैराग्राफ 4.4.5)**

पांच चुने गए ज़िलों में 169 मामलों में 1588.0412 के अधिशेष भूमि के अधिग्रहण में विलंब हुआ था। **(पैराग्राफ 4.4.7)**

चार मामलों में अधिशेष भूमि का अनियमित समनुदेशन देखा गया था। **(पैराग्राफ 4.4.9)**

कर की अल्प उगाही

39 टी ओ में से 24 में, वर्ष 2015-16 तथा 2016-17 के दौरान पूरी की गईं 798 इमारतों, भवन कर निर्धारण से बच गईं जिसके परिणामस्वरूप ₹2.70 करोड़ के भवन कर की गैर-उगाही हुई। **(पैराग्राफ 4.5)**

वर्ष 2014-15 से 2016-17 तक की अवधि के लिए मूल कर संग्रहण ब्योरों की संवीक्षा में प्रकट हुआ कि 6 टी ओ में 15 मामलों में ₹47.33 लाख का अल्प/गैर मूल कर संग्रहण हुआ था। **(पैराग्राफ 4.6)**

V.अन्य कर प्राप्तियां

क. राज्य उत्पाद शुल्क

उत्पाद शुल्क की उगाही के लिए क्रय में आयात तत्व को समाविष्ट न करने के कारण वर्ष 2016 -17 तथा 2017-18 वर्षों में ₹4.72 करोड़ की राजस्व हानि हुई।

(पैराग्राफ 5.5)

वर्ष 2017-18 के लिए 6 जिलाओं के औषध नियंत्रकों के कार्यालय से प्राप्त आंकडों के प्रति सत्यापन में प्रकट हुआ कि 11,855 व्यक्तियों ने आबकारी विभाग से मादक पदार्थों के व्यापार के लिए लाइसेंस नहीं लिए थे जिसके परिणामस्वरूप प्रति वर्ष ₹2.35 करोड़ के लाइसेंस शुल्क स्वरूप राजस्व हानि हुई।

(पैराग्राफ 5.7)

विदेश मद्य लाइसेंसधारक कंपनियों / संस्थाओं के निदेशक बोर्ड के अप्राधिकृत पुनर्गठन के लिए जुर्माना न लगाने के तथा नियमितीकरण के लिए शुल्क की गैर वसूली के कारण, वर्ष 2016-17 तथा 2017-18 के दौरान 20 कंपनियों से ₹1.20 करोड़ के राजस्व की वसूली न की गयी।

(पैराग्राफ 5.8)

ख. स्टांप शुल्क तथा पंजीकरण शुल्क

पंजीकरण विभाग में OPEN PEARL के कार्य पर निष्पादन लेखापरीक्षा

परियोजना पर संगठनात्मक तथा प्रबंधन नियंत्रणों के अभाव, प्रयोक्ता आवश्यकता

विनिर्दिष्टियों, सेवा स्तरीय करारों, सरकारी आदेशों तथा विस्तृत परियोजना प्रस्तावों की कमी के कारण लक्ष्यों की उपलब्धि में असाधारण विलंब हुआ।

(पैराग्राफ 5.12.7.1)

कारोबार निरंतरता योजना / आपदा बहाली योजना का अभाव तथा बैक अप किए आंकडों की जांच तथा पुन:नवीकरण में विफलता।

(पैराग्राफ 5.12.7.2)

आंकडा प्रविष्टि के अतिरिक्त कार्य तथा मोहर बंध या ई-मोहर बंध कागजों पर दस्तावेज की तैयारी करने के अलावा आंकडों का मान्यकरण तथा उसके सत्यापन आदि के कारण दस्तावेजों के पंजीकरण संसाधन पूर्ण होने में विलंब।

(पैराग्राफ 5.12.7.3)

ई-स्टांप की सोफ्ट कॉपी का अनुरक्षण, पासवर्ड

सुरक्षा का अभावा और असीमित रूप से प्रिंट आउट लेने की सुविधा ई-स्टांप को असुरक्षित बना देते हैं। पंजीकरण के लिए प्रयुक्त ई-स्टापों के क्रम संख्या पकडने के लिए और खरीदे गए ई -स्टांप अपर्याप्त पाए जाने पर अतिरिक्त ई-स्टांपों की खरीदी के लिए कोई प्रावधान नहीं है।

(पैराग्राफ 5.12.7.4)

लेखाओं, राजस्व विवरण, प्रेषणों के मिलाप विवरण के दस्ती अनुरक्षण तथा प्रमाणित प्रतियों, सूची प्रमाण-पत्रों तथा विवाह प्रमाण-पत्रों की हस्तचालित रूप से तैयारी एवं वितरण के कारण कंप्यूटरीकरण के बावजूद वर्कलॉड में कमी ना होना।

(पैराग्राफ 5.12.8.1)

डाटा बेस में अपूर्ण तथा / अथवा अनुचित आंकडों के परिणामस्वरूप गलत प्रबंधन सूचना प्रणाली (एम आई एस) रिपोर्ट तथा नियंत्रण पंजियां जेनेरेट हुई।

(पैराग्राफ 5.12.8.4)

31 मार्च 2009 को समाप्त वर्ष के लिए, भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की रिपोर्ट (राजस्व प्राप्तियां), केरला सरकार (खंड I) में सूचित किए गए 26 कमियों में से 20 मुद्दों का निपटारा OPEN PEARL में किया गया। तथापि, छ: मुद्दे यानि कि परियोजनाओं की समाप्ति में विलंब तथा उद्देश्यों की गैर-प्राप्ति, चालू आंकडों के गैर-मान्यकरण, अनुचित/ अभावपूर्ण रिपोर्टों की तैयारी, कारोबार निरंतरता योजना (बी सी पी)/ आपदा बहाली योजना (डी आर पी), आंतरिक नियंत्रण की कमियां अभी तक कायम है।

(पैराग्राफ 5.12.9)

स्टांप शुल्क तथा पंजीकरण शुल्क की अल्प उगाही-

उप पंजीकरण कार्यालय, एर्नाकुलम में फ्लैट अपार्टमेंट मालिकों तथा डिवलेपर/ निर्माताओं के बीच हुई 237 करारों के गैर-पंजीकरण के कारण ₹11.06 करोड़ की राजस्व हानि ।

(पैराग्राफ 5.13)

उप पंजीकरण कार्यालय, कल्पेट्टा में भूमि के गलत वर्गीकरण के कारण एक करोड के राजस्व की अल्प संग्रहण ।

(पैराग्राफ 5.14 बुलेट 1)

हिंदी में उत्कृष्ट कार्य किए अनुभाग हेतु वर्ष 2019-20 की कार्यालयीन रोलिंग ट्रॉफ़ी

लेखापरीक्षा-I कार्यालय

प्र.म.ले. श्री को प आनंद एवं वरि. उ.म.ले.श्री अनीष डी से ट्रॉफ़ी प्राप्त करते हुए रोकड़ अनुभाग से श्रीमती हेमा सी वी, वरि.ले.प.अ.

लेखापरीक्षा-II कार्यालय

प्र.म.ले.श्री को प आनंद एवं वरि.उ.म.ले. श्रीमती शेरिन एम एस से ट्रॉफ़ी प्राप्त करते हुए प्रशासन अनुभाग से श्री ए. फ़िरोज़ शाह, वरि.ले.प.अ.

रंगीन सपना

अनिल कुमार के

केयर टेकर

कितना ही अच्छा हो

यदि मैं पेड़ बन जाऊँ।

नीले नीले आसमान तक

छूने वाली डालियाँ हों।

रंग बिरंगे प्यारे-प्यारे फूलों से लद जाऊँ मैं

हरा-भरा जीवन देकर धरती को सुख दे दूँ मैं।

कितना ही अच्छा हो यदि मैं पेड़ बन जाऊँ

शीतल छाया फैलाकर मैं सब के मन को छू लूंगा।

परोपकार करके चिड़ियों को भी आसरा दूँ

धरती को हरियाली दूँ, मैं जीवन को खुशहाली दूँ।

नया साल

पारितोष चौधरी
वरि. लेखापरीक्षक

नया साल अपने साथ नई उम्मीदें, नए लक्ष्य, नये वादे नए सपने लेकर आता है । अंग्रेज़ी कैलेंडर के अनुसार 1 जनवरी को नया साल पूरे हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है भारत में भी नया साल पूरे हर्ष और उल्लास के साथ 1 जनवरी को मनाया जाता है ।

नया साल पुरानी चीज़ों को पीछे छोड़कर एक नई शुरूआत करने का समय होता है । लोग नये साल में एक नया संकल्प लेते हैं । ऐसा माना जाता है कि अगर नए साल का पहला दिन अच्छा बीत गया तो पूरा साल इसी प्रकार सुखपूर्वक बीतेगा । ऐसे तो अलग-अलग दिनों पर पूरी दुनिया में नया साल मनाया जाता है भारत में भी विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग वक़्त पर नए साल की शुरूआत होती है । हालांकि हिंदु पंचांग के अनुसार नया साल 1 जनवरी से शुरू नहीं होता है । हिंदू नववर्ष की शुरूआत गुड़ी पाड़वा से होती है । हमें हमेशा नए साल में नई उम्मीदों के साथ आगे बढ़ना चाहिए पुराने साल में हमने जो भी किया, सफल या असफल हुए उससे सीखकर एक नई उम्मीद के साथ आगे बढ़ना चाहिए । जो बीत गया उसके बारे में सोचने की अपेक्षा, आने वाले अवसरों का स्वागत करना चाहिए.....

फूल खिलेंगे गुलशन में
खूबूसरती नज़र आएगी
बीते साल की खट्टी मीठी
यादें संग रह जाएंगी ।

आओ मिलकर मनाएं नए साल को हंसी खुशी से
नए साल की पहली सुबह खुशियां अनगिनत
लाएगी।

हालांकि यह साल सारी इंसानियत के लिए बहुत ही भारी रहा, दुनिया ने कोरोना रूपी महामारी को देखा, लाखों लोगों ने अपने अपनों को खोया, दुनिया बदल सी गई और बहुत सारे ऐसे परिवर्तन देखने को मिले जिन्होनें दुनिया को हमेशा हमेशा के लिए बदल दिया । अब हर व्यक्ति की बस यही आरज़ू है कि जल्द से जल्द कोरोना की दवाई आ जाए और फ़िर से हम वही पुरानी ज़िंदगी के मज़े ले सकें ।

मानव सभ्यता के इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ कि दुनिया पूरी तरह से मास्क पर निर्भर होकर रह गई है । चिकित्सा विज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली है लेकिन ईश्वर के सामने हमारी बिसात कुछ भी नहीं है । आज इंसान ही इंसान के लिए वायरस का प्रवाहक बन गया है । अब वर्ष 2021 से यही दुआ है कि फिर से मनुष्य सामान्य जीवन जी सके और दुनिया से कोरोना महामारी की समाप्ति हो ।

ख़्वाहिशों की कश्मकश

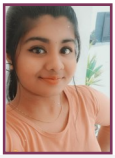

मैथिली जे आर
सुपुत्री श्रीमती राखी पी ओ
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मैं क्या कहूँ आज?
तेरे इश्क का धागा बाँध लिया मैंने।
आज मैं कुछ कहूँ तेरी आँखे पढ़ कर,
कहूँगी या नहीं कहूँगी, या कुछ कर दिखाऊंगी दुनिया को ?

मैं दुनिया के कोने-कोने को जाकर बता दूँगी
कि इश्क क्या होता है ? कैसे होता है
लेकिन ये बात तो तुमसे सीखी है मैंने
आज जो प्यार और मन को उद्वेलित करने वाली भावनाएं तुमने दी हैं;
वही तो प्यार का असली भाव है।

कुछ कहूँ तो क्या कहूँ तुमसे और दुनिया से।
तेरी नज़र और तेरे अहसास हर पल मेरे लिए ज़रूरी हैं।
मेरी आखिरी साँस तक तुम मेरे साथ रहोगे।
मैं कभी भी खुद को खोने नहीं देना चाहती हूँ।
तेरे इश्क की वजह से मैं खुश रहूँगी हर पल।

जब तुम साथ हो, तो हरेक लम्हा प्यारा लगता है।
अगर एक ज़िंदगी खुद से चुन सकूँ तो,
तुमको ही अपनाऊंगी, मेरी आशिकी।
इस दुनिया में अगर धर्म के बिना प्रेम ही विश्वास बन जाए,
तो मेरी आखिरी साँस तक मेरी मंज़िल तुम रहोगे।

अब इस वक्त तुम मेरे महबूब हो
ये हक कोई मुझसे छीन नहीं सकेगा।
शायद तुम मेरे जीवनसाथी न बन पाओ।
इस समाज और धर्म के विश्वास की वजह से
लेकिन तेरा प्यार और यह राबता,
कोई समझ न पाएगा और न ही कोई छीन सकता है।

हिंदी आंगन की तुलसी

सजींद्र कुमार

सहायक पर्यवेक्षक

जैसा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने कहा था, भारत के युवक एवं युवतियां अंग्रेज़ी और दुनिया की दूसरी भाषाएं खूब पढें मगर मैं हरगिज़ यह नहीं चाहूंगा कि कोई भी हिंदुस्तानी अपनी मातृभाषा को भूल जाए या उसकी उपेक्षा करे या उसे देखकर शरमाए अथवा यह महसूस करे कि अपनी मातृभाषा के ज़रिए वह ऊंचें से ऊंचा चिंतन नहीं कर सकता।

वास्तव में गांधी जी के इस विचार पर सोचने की आवश्यकता है हिंदी कुछ लोगों या प्रांतों तक संकुचित रहने का माध्यम नहीं है। बल्कि हिंदी भारत की संस्कृति, सभ्यता, एकता एवं प्रेम को दर्शाने वाली अभिव्यक्ति है। भारत को अगर जानना है तो हिंदी सीखना अनिवार्य है। भारत ने विश्व जगत को संस्कृति, सभ्यता, सुरक्षा व अर्थव्यवस्था में आश्चर्यचकित कर दिया है। भारतीय फिल्मों, कलाकारों, पेशेवर कामगारों व धार्मिक गुरूओं के चाहने वालों की संख्या करोड़ों में है तथा विश्व के लगभग 150 से अधिक देशों में हिंदी को पसंद किया जाता है। और विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा को प्रमुख स्थान प्रदान किया गया है। हिंदी भाषा पूर्णत: वैज्ञानिक भाषा है हिंदी भाषा सरल व दूसरी भाषा के शब्दों को समाहित करने वाली सक्षम भाषा है आधुनिक युग में हिंदी तकनीकी क्षेत्र में भी बड़ा योगदान दे रही है। आज हिंदी भाषा में ई-मेल, मोबाईल द्वारा संदेश ई बुक हिंदी के एप्लीकेशन तथा हिंदी भाषा में बोलकर कम्प्यूटर में टंकण करना सब उपलब्ध है।

विश्व की महाशक्तियां आज भारत के साथ जुड़ना चाहती हैं किन्तु हिंदी की यह विडम्बना है कि विश्व स्तर पर सम्मान पाने पर भी भारत की राजभाषा होने पर भी भारत की एकता को कायम रखने वाली भाषा होने पर भी आज अपने देश में अपनों की उपेक्षा का शिकार है।

जैसा कि विनोवा भावे ने कहा था कि मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज़्ज़त करता हूं परंतु मेरे देश में हिंदी की इज़्ज़त न हो यह मैं नहीं सह सकता। हम कब तक विदेशी भाषा से स्वतंत्र होंगे। बापू ने कहा था राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है आख़िर कब तक हम गूंगे बने रहेंगे।

अपनी राष्ट्रभाषा को अपने आंगन की तुलसी बनाएं और भारत की संस्कृति, एकता में अपना योगदान दें।

ज़िंदगी का चुनाव

जे आर मालविका
सुपुत्री श्रीमती राखी पी ओ
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

ज़िंदगी में जीने की वजह सिर्फ विद्या, कामयाबी, शादी और फिर मौत का इंतज़ार करना ही नहीं है । ज़िंदगी में इसके परे भी बहुत कुछ है । लेकिन परिवार की ज़िम्मेदारियां निभाने और सामान्य जीवन जीने में सब व्यस्त हैं । ऐसा क्यों होता है कि ज़िंदगी की भाग-दौड़ में हम जीवन जीना ही भूल जाते हैं और बहुत सी तमन्नाएं और ख़्वाहिशें अधूरी रह जाती हैं पर जब तक इस बात का अहसास होता है ज़िंदगी का अंतिम पड़ाव निकट होता है । ऐसी ज़िंदगी सिर्फ वक्त बिताने के लिए है पर वक्त को जीने के लिए नहीं । ज़िंदगी वही है जब मन के अहसास को महत्वपूर्ण मान कर, आने वाले कल की चिंता छोड़कर, बीते हुए वक्त के बारे में ना सोच कर 'अब' इस वक्त को पल-पल जिया जाए और अपनी तमन्नाओं को मंज़िल तक ले जाया जाए ।

ज़िंदगी उस पल से शुरु होती है जब डर के बदले, मान-सम्मान की चिंता के बदले, अपनी तरह से जीने के लिए तैयार हो जाते हैं । ज़िंदगी एक ही बार मिलती है और वक्त बहुत तेज़ी से गुज़र जाता है । इतनी छोटी सी समय सीमा में हम क्या दूसरों की पसंद-नापसंद के बारे में सोच कर और उनके विकल्पों के अनुसार जीकर दुखी रहें, घुट-घुट कर जिएं ? या अपनी इच्छानुसार खुशी से जीवन जिएं ? दूसरों की पसंद से ज़िंदगी उनको जीनी है हमें नहीं ।

आज बच्चों के भविष्य को लेकर माता-पिता पहले ही तय कर लेते हैं कि उन्हें जीवन में क्या करना है पर वे यह भूल जाते हैं कि बड़े होकर बच्चों की अपनी भी इच्छाएं होंगी । पहले शिक्षा फिर माता-पिता की पसंद से विवाह । उनकी ज़िम्मेदारी पूरी हो गई । जीवनसाथी अच्छा हुआ तो भावनाओं का सम्मान कर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहन देगा नहीं तो वही दिनचर्या । इतना आसान है क्या बच्चों के जीवन का फैसला करना ? अपने व्यक्तिगत निर्णय बच्चों पर थोपना क्या सहीं हैं ? उनके भावी जीवन के बारे में उनसे भी पूछा जाना चाहिए कि उनकी इच्छा क्या है ? बच्चे कोई क्रय-विक्रय की वस्तु नहीं जिनका दाम लगाया जाए या मोल-भाव किया जाए ।

माता-पिता बिना बच्चों की इच्छा जाने बिना परिवार की हैसियत देख कर, आर्थिक स्थिति देख कर भावी पति या पत्नी का

चुनाव करते हैं । किसी अपरिचित के साथ भेजने में उन्हें कोई डर या संकोच नहीं । क्योंकि समाज में हमेशा ऐसा ही होता आया है और वो भी इसी का अनुसरण करते हैं । एक अजनबी जिसके बारे में पूरी तरह से पता ना होते हुए भी विवाह कराया जाता है भले ही दोनों में ताल-मेल हो या ना हो या फिर सारा जीवन परेशान रहें ।

अभिभावकों को अपने बच्चे या बच्ची के मन को पढ़ कर उनकी इच्छाओं का समर्थन करना चाहिए । बेटी किसी पर बोझ नहीं है जिसे बस इतना ही सिखाया जाए कि शादी के लिए क्या ज़रूरी है, ससुराल में कैसे रहना है, कैसे जीना है । बेटी का तो पूरा जीवन ही जैसे शादी को ध्यान में रख कर बुना जाता है । हर काम सिखाओ, कैसे चलना, कैसे बैठना, कैसे बोलना, कैसे हसना आदि । जैसे वो बस शादी करने के लिए ही पैदा हुई है, उसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य केवल शादी और घर संभालना ही है ।

बच्चों को अच्छी तरह से जीना सिखाना आवश्यक है । बेटियां किसी पर बोझ नहीं हैं किसी के भी साथ भेजने के लिए । उनको अपनी ज़िंदगी के रास्ते चुनना सिखाओ ताकि वे अच्छे-बुरे में फ़र्क करना सीख सकें । उन्हें उड़ने दो, अपनी पसंद के काम करने दो, उन्हें वक्त दो, समय आने पर वे खुद ही शादी के बारे में सोचेंगी । घर-परिवार, नौकरी-कारोबार, पैसा, आराम आदि के अलावा इंसान कैसा है, ये भी देखना ज़रूरी है । बच्चे पतंग के समान होते हैं जिसकी डोर माता-पिता के हाथ में होती है । धागे से डोर को सिर्फ पकड़ना चाहिए और दिशा नियंत्रण करना चाहिए । बच्चों को लेकर प्रतिस्पर्धा नहीं करनी चाहिए । प्रत्येक कन्या अपना भाग्य स्वंय लेकर आती है।

लोग क्या सोचेगें यही सोच कर कितनी बार माता-पिता बच्चों के सपनों का नाश कर देते हैं । दूसरों को खुश करने की बजाए बच्चों की खुशी देखनी चाहिए । उनके साथ रह कर उन के फैसलों को समझना चाहिए । ज़िंदगी से डरना नहीं पर उसका सामना करना आना चाहिए । जीवन कोई पहले से निर्धारित प्रश्नपत्र नहीं जिसके उत्तर हम याद करते हैं । आने वाले समय में क्या छुपा है यह कोई नहीं जानता । ज़िंदगी एक सुंदर कहानी है जिसमें जोखिम भी हैं पर उन्हें पार कर आगे बढ़ने में ही जीवन की सार्थकता है ।

ज़िंदगी को सार्थक बनाओ, अपनी खुशी से, निडर हो कर । समय के साथ-साथ जीवन भी परिवर्तनशील है । माता-पिता को भी समय के साथ बदलना चाहिए । समाज के नियमों में भी परिवर्तन अनिवार्य है । जो समाज समय अनुसार परिवर्तन नहीं करता उसका शीघ्र ही विनाश हो जाता है ।

सविता के पिछले अंक का विमोचन करते हुए श्रीमती जी सुधर्मिनी, प्र.म.ले (ले व ह), श्री एस. सुनील राज, म. ले. (लेखापरीक्षा-I), श्री अनीष डी, वरि.उ.म.ले.(प्रशा.) एवं सुश्री सुबरंजनी एस आर, उ.म.ले.(ए एम जी-II)

एन आर आई

देविका ए एन
सुपुत्री श्री जी सी नारायणन पोट्टी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

न इधर के रहे
न उधर के रहे
बीच में ही हमेशा लटकते रहे।

न भारत को भुला सके
न विदेश को अपना सके
एन आर आई बनके काम चलाते रहे।

न हिंदी को छोड़ सके
न अंग्रेज़ी को पकड़ सके
देसी एक्सेंट में गोरों को उलझाते रहे।

न शॉर्टस पहन सके
न सलवार कमीज़ छोड़ सके
जींस पर कुर्ता पहन कर इतराते रहे।

न नाश्ते में डोनट खा सके
न खिचड़ी को भूला सके
पिज़्ज़ा में मिर्च छिड़क कर मज़ा लेते रहे।

न इधर के रहे
न उधर के रहे
बीच में ही हमेशा लटकते रहे।

वाह री किस्मत

शाहनवाज़ नज़ीर मोहम्मद
पर्यवेक्षक

कोरोना ने पूरी दुनिया में बहुत बदलाव लाया है बहुतों के पास तो पैसा ही नहीं बचा। किसी-किसी के पास यानि दा न्यू उपी रिच- द सालरीड महाराजास। जिन के पास खूब पैसा आया मगर खर्च करने का कोई ज़रिया नहीं है तो कई लोग ऐसे भी बदनसीब रहे कि पेट पालने के भी लाले पड़ गए।

लोगों को बहुत फ़ुरसत मिली तो उनको कुत्तों को पालने का शौक आया। कुत्तों को इतनी इज़्ज़त मिली कि कुत्तों को कुत्ता बोलना उनकी तौहीन समझा जाने लगा, अब लोग उन्हें अलग-अलग नाम से ऐसे पुकारते हैं और ऐसे बात करते हैं कि वो कुत्ता नहीं बल्कि कोई अपना बेटा-बेटी है हालांकि कोई इतने प्यार से संतान को नहीं पालता। दफ़्तर आते थे तो पहले साड़ी कपड़े वगैरह के बारे में बात होती थी अब अपने टिंकु, पिन्टु के बारे में होती है। आज पिंटू ने फ़ंसा दिया, आज टिंकु ने मुझे किस किया। आज पिंटू की तबियत ठीक नहीं आज पिंटू के बाल कटवाए। देखते-देखते लोग अपने पेट्स के ऊपर लाखों रूपये खर्च करने लगे। कभी-कभार बात उनके खाने-पीने की ओर भी जाती है। सुनने में आया है कि हमारे एक साथी ने बोला कि उनका कुत्ता अब इडली नहीं खाता।

मैं तो सोच में पड़ गया- हे भगवान ! वो कुत्ता कितना किस्मत वाला होगा जो इडली खाता है तो हमारे एक दूसरे साथी ने कहा कि उनका टिन्कु तो आजकल चिकन जब मसाले के साथ दो तो ही खाता है।

एक साहब से पूछा कि कल आप छुट्टी पर थे कोई ख़ास बात तो बोले कि मेरे रॉकी को घुमाने ले जाना था इसलिए मैंने छुट्टी ले लिया। हमने सोचा हे भगवान ! ये क्या माजरा है। इस जन्म में मनुष्य होने से अगले जन्म में कुत्ता ही होना बेहतर है मगर भगवान इडली खाने की नौबत नहीं आये।

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) एवं

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) के कार्यालय

केरल, तिरुवनंतपुरम